नमो-नमो जै श्रीहरिवंश।
रसिक अनन्य वेनुकुल मंडन लीला मानसरोवर हंस॥
नमो जयति श्रीवृन्दावन सहज माधुरी रास विलास प्रसंस।
आगम निगम अगोचर राधे चरन सरोज व्यास अवतंस॥

****

श्री राधावल्लभ नमो-नमो।
कुंज निकुँज पुँज रतिरस में रूपरासि जहाँ नमो-नमो॥
सुखसागर गुन नागर रसनिधि रस सुधंग रंग नमो-नमो।
स्याम सरीर कमल दल लोचन दुख मोचन हरि नमो-नमो॥
वृंदाविपिन चंद नँद नंदन, आनँद कंद सुख नमो-नमो।
सर्वोपरि सर्वोपम निसिदिन व्यासदास प्रभु नमो-नमो॥

****

श्रीभक्त-नामावली

हमसों इन साधुन सों पंगति।
जिनको नाम लेत दुख छूटत, सुख लूटत तिन संगति॥
मुख्य महन्त काम रति गणपति, अज महेस नारायण।
सुर नर असुर मुनी पक्षी पशु, जे हरि भक्ति परायण॥
वाल्मीकि नारद अगस्त्य शुक, व्यास सूत कुल हीना।
शबरी स्वपच वशिष्ठ बिदुर, विदुरानी प्रेम प्रवीना॥
गोपी गोप द्रोपदी कुन्ती, आदि पाण्डवा ऊधो।
विष्णु स्वामि निम्बारक माधो, रामानुज मग सूधो॥
लालाचारज धनुर्दास, कूरेश भाव रस भीजे।
ज्ञानदेव गुरु शिष्य त्रिलोचन, पटतर को कहि दीजे॥
पद्मावती चरण को चारन, कवि जयदेव जसीलौ।
चिन्तामणि चिद्रूप लखायो, विल्वमंगलहिं रसीलौ॥
केशवभट्ट श्रीभट्ट नारायन, भट्ट गदाधर भट्टा।
विट्ठलनाथ वल्लभाचारज, ब्रज के गूजरजट्टा॥
नित्यानन्द अद्वैत महाप्रभु, शची सुवन चैतन्या।
भट्ट गोपाल रघुनाथ जीव, अरु मधु गुसांई धन्या॥

रूप सनातन भजि वृन्दावन, तजि दारा सुत सम्पति।
व्यासदास हरिवंश गुसांई, दिन दुलराई दम्पति॥
श्रीस्वामी हरिदास हमारे, विपुल विहारिनि दासी।
नागरि नवल माधुरी बल्लभ, नित्य विहार उपासी॥
तानसेन अकबर करमैती, मीरा करमा बाई।
रत्नावती मीर माधो, रसखान रीति रस गाई॥
अग्रदास नाभादि सखी ये, सबै राम सीता की।
सूर मदनमोहन नरसी अलि, तस्कर नवनीता की॥
माधोदास गुसांई तुलसी, कृष्णदास परमानन्द।
विष्णुपुरी श्रीधर मधुसूदन, पीपा गुरू रामानन्द॥
अलि भगवान मुरारि रसिक, श्यामानन्द रंका वंका।
रामदास चीधर निष्किञ्चन, सम्हन भक्त निसंका॥
लाखा अङ्गद भक्त महाजन, गोविन्द नन्द प्रबोधा।
दास मुरारि प्रेमनिधि विट्ठलदास, मथुरिया योधा॥
लालमती सीता प्रभुता, झाली गोपाली बाई।
सुत विष दियौ पूजि सिलपिल्ले, भक्ति रसीली पाई॥
पृथ्वीराज खेमाल चतुर्भुज, राम रसिक रस रासा।
आशकरण जयमल मधुकर नृप, हरिदास जन दासा॥
सेना धना कबीरा नामा, कूबा सदन कसाई।
बारमुखी रैदास सभा में, सही न श्याम हँसाई॥
चित्रकेतु प्रह्लाद विभीषण, बलि गृह वाजे बावन।
जामवन्त हनुमन्त गीध गुह, किये राम जे पावन॥
प्रीति प्रतीति प्रसाद साधु सों, इन्हें इष्ट गुरु जानों।
तजि ऐश्वर्य मरजाद वेद की, इनके हाथ बिकानों॥
भूत भविष्य लोक चौदह में, भये होयँ हरि प्यारे।
तिन-तिन सों व्यवहार हमारो, अभिमानिन ते न्यारे॥
'भगवतरसिक' रसिक परिकर करि, सादर भोजन पावै।
ऊँचो कुल आचार अनादर, देखि ध्यान नहिं आवै॥

**